2 नवम्बर 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर
दोपहर 3 से 4 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 43, अंक : 15
नवम्बर (प्रथम), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

बारह भावना ऑनलाइन संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट, जयपुर द्वारा दिनांक 12 से 18 अक्टूबर तक विदुषी बहनों द्वारा बारह भावना संगोष्ठी का ऑनलाइन आयोजन हुआ, जिसमें देशभर की 40 विदुषी बहनों ने भाग लिया।

प्रथम दिन प्रो. सुदीपजी दिल्ली के मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त विदुषी राजकुमारी दीदी, ब्र. नमिता बहिन, ब्र. समता बहिन उज्जैन, विदुषी गीता बहिन बीना, ब्र. रजनी बहिन, डॉ. स्वर्णलताजी नागपुर, विदुषी धवलश्री ताई बेलगाँव के व्याख्यानों का भी लाभ मिला।

वक्ताओं के अन्तर्गत सुश्री वर्षा शास्त्री जयपुर, श्रीमती अनुभूति शास्त्री लूणदा, शाश्वत सेजल जैन दलपतपुर, ब्र. प्रियंका बहिन भोपाल, ब्र. विद्याताई बाहुबली, ब्र. मंजूषाताई अकलूज, शाश्वत दृढ़ता जैन कच्छ, आत्मार्थी आकांक्षा जैन ग्वालियर, श्रीमती श्रद्धा जैन विदिशा, आत्मार्थी समीक्षा जैन विदिशा, आत्मार्थी पूर्ति जैन टीकमगढ़ एवं शाश्वत खुशबू जैन करेली के वक्तव्य हुये।

प्रतिदिन के मंगलाचरण एनी जैन, लब्धि जैन जयपुर, निष्ठा-आस्था शाह कनाडा, प्रांजल जैन, लिपि जैन उदयपुर, मेघा जैन दिल्ली, चिन्मयी जैन मेरठ एवं किंजल संघाणी राजकोट ने किये।

प्रतिदिन की अध्यक्षता क्रमशः श्रीमती सरोज सिंघई जयपुर, श्रीमती अध्यात्मप्रभा जैन मुम्बई, श्रीमती सरोज गाँधी अहमदाबाद, श्रीमती चन्द्रावती पुजारी खनियाँधाना, श्रीमती शोभा-प्रमोदजी विदिशा एवं श्रीमती सुलेखा शाह जयपुर ने की। श्रीमती मीनाबेन-अरविंद भाई दोशी मुख्य अतिथि थीं।

संचालन क्रमशः श्रीमती दिव्या जैन छिंदवाड़ा, श्रीमती संध्या जैन इंदौर, श्रीमती समीक्षा पुजारी खनियाँधाना, श्रीमती अनुभूति जैन पूना, श्रीमती अमीबेन पारेख राजकोट, श्रीमती समता जैन कानपुर एवं श्रीमती प्रीति-संजय जैन जयपुर ने किया।

समापन के अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का बारह भावना पर विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर ने। गोष्ठी के निर्देशक पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर ने बताया कि जब कोरोना की विषम परिस्थितियाँ समाप्त हो जायेंगी, तब सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट द्वारा विदुषी बहिनों के माध्यम से प्रत्यक्षरूप में संगोष्ठी आयोजित करने की भावना है। जिसकी सभी ने हार्दिक अनुमोदना की।

गोष्ठी का संयोजन ब्र. प्रीति बहिन खनियाँधाना एवं श्रीमती प्रीति जैन जयपुर ने किया। संपूर्ण आयोजन में पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

- संजय सेठी, जयपुर

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की -

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में निम्न गोष्ठियों का आयोजन हुआ -

(1) दिनांक 11 अक्टूबर को '**समाधि और सल्लेखना**' विषय पर द्वादशम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर ने की। मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से ईशान जैन उदयपुर ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से अशोक जैन चेन्नई ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. नेमिनाथजी बालिकाई कुम्भोज बाहुबली ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से संस्कार जैन ईसरवाड़ा ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से संयम जैन गुढाचन्द्रजी ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता मेहुल जैन उदयपुर एवं द्वितीय सत्र में अर्पित जैन खनियांधाना रहे। आभार प्रदर्शन डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

(2) दिनांक 18 अक्टूबर को '**अनेकान्त और स्याद्वाद**' विषय पर त्रयोदशम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पण्डित नयनजी शाह हैदराबाद ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से तेजस जैन ईचलकरंजी ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से समकित जैन बकस्वाहा ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रमोदजी शास्त्री जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से संयम जैन गढाकोटा ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से संयम जैन दिल्ली ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता सोहिल पाटील हुक्केरी एवं द्वितीय सत्र में भव्या जैन दिल्ली रहे। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की पुरानी ईमेल आई डी. **ptstjaipur@yahoo.com** बन्द हो रही है; अत: संस्था को भेजी जाने वाली सूचनाएं, समाचार आदि निम्न ईमेल पर ही भेजें-

ptstjaipur67@gmail.com

साभार दैनिक भास्कर नागपुर • 1 नवंबर, 2015

डॉक्टर्स ही नहीं खुद जांच करने वाली लैब और पटाखा व्यापारी चौंके, कहा ये खतरनाक

लैब में साबित: पटाखों में सीसा और पारा

दैनिक भास्कर **सुरक्षित दीपावली**

देश में पहली बार

- चार श्रेणियों में पटाखों की वैज्ञानिक जांच
- रिपोर्ट पर देश के जाने-माने डॉक्टर्स की राय

त्योहारों की रौनक पटाखों और रोशनी के बिना संभव ही नहीं है। लेकिन ये हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए खतरनाक भी हैं। इनका इस्तेमाल एक सीमा तक ही सही है। इसीलिए हमने वैज्ञानिक तरह से चार स्पेसिफिक श्रेणियों के पटाखों की जांच कराई। रिपोर्ट में पता चला कि इसमें सीसा और पारा जैसे खतरनाक तत्व बड़ी मात्रा में मिले हुए हैं, जो 10-10 साल तक शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं। इसकी रिपोर्ट को हमने डॉक्टर्स से साझा किया ताकि आपको इसके खतरे स्पष्ट पता चल सकें। इसी खतरे को जानने में आपकी मदद करती ये विशेष रिपोर्ट।

हर श्रेणी के पटाखों को खास बनाने के लिए मिलाते हैं अलग तत्व और रसायन

धमाके वाले: प्रेशर के लिए भरते हैं गन पाउडर की गोली

- रस्सी बम में 0.74 फीसदी सल्फर और 0.73 फीसदी कार्बन मिला। दूसरे वाइस टेस्ट में आवाज अधिकतम 117 डेसिबल मिली।

- ईएनटी विशेषज्ञ डॉ. संगीता वर्मा के अनुसार तेज आवाज के पटाखों से बचें। क्योंकि सामान्यतौर पर व्यक्ति 85 डेसिबल तक की आवाज सुन सकता है। हर तीन डेसिबल के बाद खतरे बढ़ते जाते हैं।

सीमा : ऐसे पटाखे चलाते समय कम से कम 6 मीटर की दूरी बनाए रखें।

संख्या : ऐसे पटाखे एक साथ न छोड़ें। आवाज खतरनाक स्तर पर पहुंच जाती है।

रोशनी वाले: हर रंग के लिए अलग-अलग सॉल्ट

- फुलझड़ी में पारा 14.21 पीपीएम (प्रति 10 लाख ग्राम) मिला। सीसा 16.30 पीपीएम मिला।
- पारा हमारे पाचन तंत्र को कमजोर करता है। सीसा बच्चों के नर्वस सिस्टम और किडनी को नुकसान पहुंचाता है।

- चेस्ट स्पेशलिस्ट डॉ. अशोक महाशूर कहते हैं कि 6 साल से कम के बच्चे और फेफड़ों के मरीजों के लिए पारा और सीसा दोनों घातक हैं।

पारा मेडिकल उपकरणों में भी इस्तेमाल नहीं होता।

सीमा : फेफड़ों के मरीज आतिशबाजी से दूर रहें। बच्चे फुलझड़ी आदि ही चलाएं।

संख्या : रोशनी वाले 5 से 10 पटाखे ही काफी हैं क्योंकि ये खतरनाक हैं।

उड़ने वाले: हल्की फ्लूगैस उड़ाती है रॉकेट

- 12 रंगों में फूटने वाले रॉकेट में कार्बन 32.68 फीसदी मिला। इसमें सीसा और पारा पाया गया।
- दिवाली के ही दौरान अलग-अलग प्रदूषक तत्व करीब डेढ़ से आठ गुना तक ज्यादा हो जाते हैं वायुमंडल में।

- हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ.आरआर कासलीवाल के अनुसार रॉकेट के प्रदूषण से कैंसर, अस्थमा, मिर्गी जैसे रोग हो सकते हैं।

कार्बन वाले पटाखों से खांसी का दौरा आ सकता है।

सीमा : हाईब्लडप्रेशर, अस्थमा आदि के मरीज एक भी मिनट ऐसे पटाखों के बीच न रहें।

संख्या : बच्चों को दिखाने के लिए खुद रॉकेट छोड़ें। 5-6 रॉकेट काफी हैं।

घूमने वाले: नली से फ्लूगैस निकलती है तो घूमती है

- चकरी में 100 ग्राम में 0.73 फीसदी सल्फर और 8 फीसदी कार्बन पाया गया। जो खतरनाक है।

- डॉ. एसके गुप्ता बताते हैं कि सल्फर और कार्बन दोनों दिल और फेफड़ों के लिए बेहद खतरनाक है। इससे निकलने वाला धुआं बीमारी की जड़ है। चकरी को बच्चों को दिखाने के चक्कर में घर में तो बिल्कुल न जलाएं।

सीमा : इसे ऐसी जगह ही जलाएं जहां पर खुली हवा हो। ताकि धुआं निकल सके।

संख्या : बच्चों के ज्यादा जिद करने पर भी कम से कम चलाएं।

8 सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

द्वितीय अध्याय का सार (संसार अवस्था का स्वरूप)

(गतांक से आगे...)

कर्मबंध का निदान एवं कर्मों का अनादिपना

अब यहाँ दूसरे अध्याय में सबसे पहले जीव को अपने बंधन पर भरोसा दिलाते हैं, क्योंकि बंधन से मुक्ति का नाम ही मोक्ष है। जिसे अपने बन्धन पर भरोसा नहीं हो वह मुक्ति प्राप्ति के लिये प्रयत्न क्यों करे? इस बात को पण्डितजी साहब ने वैद्य और रोगी के उदाहरण से सांगोपांग समझाया है।

यहाँ सर्वप्रथम कर्म बंधन का निदान बताया है तथा कर्म बंधन को अनादि सिद्ध किया है। यद्यपि द्रव्यकर्म के उदय में भावकर्म तथा भावकर्म के होने पर द्रव्यकर्म का बंध होता है; इसप्रकार दोनों में इतरेतराश्रय अर्थात् एक दूसरे के आश्रित होने का दोष दिखाई देता है; तथापि पण्डितजी ने प्रवचनसार गाथा 121 की तत्त्वप्रदीपिका टीका के उद्धरण से इसका निराकरण करते हुए द्रव्यकर्म के संबंध को अनादि स्वयं सिद्ध बताया है। साथ में एक युक्ति भी दी है कि यदि रागादि को कर्म के निमित्त के बिना पहले स्वीकार किया जाये तो रागादि के स्वभाव होने का प्रसंग प्राप्त होगा, क्योंकि जो निमित्त के बिना हो, उसी का नाम स्वभाव है। इसप्रकार आगम और युक्ति से द्रव्यकर्म को अनादि सिद्ध किया। यद्यपि यह बात सत्य है कि रागादि भी अनादि से हैं, तथापि यहाँ द्रव्यकर्म को ही अनादि सिद्ध करने का प्रयोजन है।

द्रव्यकर्म और आत्मा अनादि से साथ होने पर भी वे दोनों भिन्न-भिन्न ही हैं; क्योंकि वे बाद में भिन्न होते हुए दिखाई देते हैं। न्यारे-न्यारे द्रव्यों का भी अनादि से संबंध हो सकता है, इसे सिद्ध करने के लिये उन्होंने चार उदाहरण दिये हैं- 1. जल-दूध, 2.सोना-किट्टिक, 3. तुस-कण तथा 4. तिल-तेल।

अपनी और कर्मों की भिन्नता बताते हुए कहा कि मैं जीव चेतना गुण सहित हूँ; जबकि कर्म चेतना रहित हैं। मैं अमूर्तिक हूँ; जबकि कर्म मूर्तिक हैं। मैं संकोच विस्तार वाला असंख्यातप्रदेशी एक द्रव्य हूँ; जबकि कर्म अनंत पुद्गल परमाणुओं के पिण्ड हैं। इसप्रकार भिन्नता है, तथापि अनादि से संबंध भी है। अनादि संबंध होते हुए भी **जीव का कोई प्रदेश कर्मरूप नहीं होता और कर्म का कोई परमाणु जीवरूप नहीं होता। यह विशेष ध्यान देने योग्य है।** (क्रमशः)

ज्ञानपहेली – मोक्षमार्गप्रकाशक-अध्याय 4 का उत्तर

आ[24]											1 प	र्या	य[12]	
पा		मो[25]											था	
11 प	रो	क्ष							2 स्व	रू	3 प[13]	दा	र्थ	
र				भ्र[19]			रा[14]				रि		प	
			4 प्र[20]	म	त्त	यो	ग		अ[15]		ग्र		ना	
			यो		5 ए	क	क्षे	त्रा	व	गा	ह			
			ज						धि					
		अ[21]	न	ध्य	व	सा	य		ज्ञा					
		नु	भू						8 न	र	क[16]			
		प	त								षा			
		का					सं[23]		9 अ[17]	सं	य	म[18]		
7 वि[22]	प	री	ता	भि	नि	वे	श		वि			हि		
भा							य		र			मा		
व									10 ति	र्थ	च			

ज्ञानपहेली अध्याय-4 के अन्तर्गत 38 उत्तर प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 13 उत्तर सही हैं, उनके नाम निम्नप्रकार हैं –

प्रथम स्थान – 1. एम.सी. जैन, कोटा

द्वितीय स्थान – 2. सुमन चांदमल जैन, कोटा

तृतीय स्थान – 3. भूपाल देवप्पा चौगुले सांगली (महा.)

सान्त्वना पुरस्कार –

4. **मानसी जैन, दिल्ली**
5. **किरण जैन, सूरत**
6. **पारस जैन, इन्दौर**
7. **कुसुम जैन, कोटा**
8. **सलोनी जैन, कोलारस**

अन्य सही उत्तर देने वाले – 9. भानुकुमार जैन कोटा, 10. ज्योति मेहता अहमदाबाद, 11. केवलचंद जैन अशोकनगर, 12. रमेशचंद जैन कोटा, 13. श्वेता जैन वलसाड (गुज.)

– आप्त अनुशील जैन, दमोह (संयोजक)

(नोट :- ● अधिकतर साधर्मियों ने 'यथार्थपना' शब्द के स्थान पर 'यथार्थज्ञान' लिखा है; ग्रन्थ से पढकर उत्तर लिखने पर ऐसी गलती नहीं होगी। ● 17 अक्टूबर को प्रकाशित ज्ञानपहेली अध्याय-6 में जो बॉक्स भरे नहीं जा सके, उन्हें खाली ही रहने देवें और अपना उत्तर लिख देवें)

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक से प्रकाशित जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) एवं वीतराग-विज्ञान (मासिक) पत्रिकाएं ईमेल या मोबाइल पर मंगाने हेतु सम्पर्क करें - 9660668506 **(पीयूष कुमार जैन)**

सर्वोदय अहिंसा अभियान

10 पटाखों

लाभ 0%

से हानि 100%

सोचिये! और समझिये!! निर्णय कीजिये!!!

यदि आप नेत्रदान और रक्तदान के समर्थक हैं तो पटाखे न चलायें, क्योंकि पटाखों से आँखों की रोशनी चली जाती है।

यदि आप प्रकृति प्रेमी और पर्यावरण प्रेमी हैं तो पटाखे न चलायें क्योंकि पटाखों से प्रकृति और पर्यावर को नुकसान होता है।

अरबों रुपयों की व्यर्थ में बर्बादी

पटाखों के रूप में हम एक दिन में अरबों रुपयों में आग लगा देते हैं, जिससे नुकसान ही नुकसान है, फायदा कुछ नहीं। जितने रुपयों के पटाखे हम एक दिन में फूँक देते हैं, उतने रुपयों से हजारों परिवारों का पेट पाला जा सकता है।

आग लगने से संपत्ति का नुकसान

पटाखों से कई स्थानों पर भीषण आग लग जाती है, जिससे करोड़ों-अरबों रुपयों की सम्पत्ति उसमें जलकर नष्ट हो जाती है और अनेक परिवारों का जीवन अंधकारमय हो जाता है। ये हादसे न सिर्फ दीपावली पर होते हैं, अपितु जब भी पटाखों का प्रयोग होता है, तब ऐसे हादसे पूरे साल भर होते रहते हैं।

अरबों-अनन्तों जीव-जन्तुओं-प्राणियों की हत्या

हमें आग की आँच/तपन से डर लगता है तो पटाखों की भयंकर आग से छोटे-छोटे प्राणियों का जल मरना तो निश्चित है। विज्ञान कहता है कि पटाखों की आवाज से अनेक पशुओं के गर्भ गिर जाते हैं, उसकी विषैली वायु उन्हें अंधा-बहरा बना देती है। महापर्व पर महापाप का यह तांडव कितना उचित है?

वायु, जल, ध्वनि और मिट्टी का प्रदूषण

पटाखों की तेज आवाज से ध्वनि प्रदूषण, पटाखों के धुँए एवं उसकी गैसों से वायु प्रदूषण, पटाखा जलने के बाद उसकी अवशिष्ट सामग्री से जल एवं मिट्टी का प्रदूषण होता है, जो कि हम सभी के जीवन के लिए प्राणघातक है। पूरे वर्ष पर्यावरण की सँभाल करना तथा एक दिन उसे यूँ बर्बाद करना क्या समझदार लोगों का काम है?

निवेदन : इस पावन पर्व पर एक पेड अवश्य लगायें!

आँखों एवं कानों पर बुरा प्रभाव

पटाखों की तेज रोशनी से तथा बारूद आँखों में जाने से आँखें खराब हो जाती हैं। इसकी तेज आवाज से कानों के पर्देतक फट जाते हैं। श्वास के रोगियों के लिए यह महापर्व आराधना का नहीं अपितु महा यातना का पर्व बन जाता है, उन्हें अनचाही कैद का सामना करना पड़ता है। इस कुकृत्य के जिम्मेदार क्या पटाखा फोड़ने वाले नहीं हैं?

ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा

पटाखों के जलने से निकलने वाली कार्बन डाई ऑक्साइड एवं हानिकारक गैसों से वायुमंडल दूषित होता है, जिससे ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा निरंतर बढ़ रहा है।

ईश्वर की वाणी का अपमान

किसी भी धर्म में हिंसा करने, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने का उपदेश नहीं दिया गया है। हम पटाखे फोड़कर प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं तथा अनेक जीव-जन्तुओं को जिन्दा जलाकर ईश्वर की वाणी का अपमान/अनादर कर रहे हैं।

शारीरिक क्षति एवं जनहानि

बम विस्फोट करने वालों को हम आतंकवादी कहते हैं तो विश्व में प्रतिवर्ष पटाखों की आग से लाखों लोग अंधे/बहरे/घायल हो जाते हैं तथा हजारों की मृत्यु हो जाती है। आपके पटाखा प्रेम के दुष्परिणाम देखने के लिए दीपावली के अगले दिन अपने नगर के अस्पताल में जरूर जायें और फिर स्वयं विचार करें कि हम कौन हैं?

पटाखा फैक्ट्री में आग, 54 मरे

फैक्ट्री का मलबा अभी भी सुलग रहा है। भारी गर्मी से कुछ बिना फटे पटाखों में विस्फोट होने की आशंका जताई है। पुलिस ने पांच एकड़ में फैले फैक्ट्री के आसपास के क्षेत्र को घेर लिया है। दमकलकर्मी आग बुझाने में लगे हैं। इसके बाद मलबे को हटाने का काम शुरू किया जा सकेगा।

Tweet

VicePresidentOfIndia
@VPSecretariat

Children from an NGO "Sarvodaya Ahimsa met me and greeted me on Diwali and shared with me explaining the harmful effects of crackers.
I appreciate their motive to promote "Happy and safe Diwali with the message- Say NO to crackers".
#Diwali

8:43 am · 31 Oct 18

निवेदक
तप्रसाद जैन

आयोजक
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन
प्रायोजक
श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

अध्यक्ष
श्री दि. जैन विश्वदेशना ट्रस्ट
राजपुर रोड, दिल्ली

संयोजक : संजय शास्त्री, जयपुर

त्योहार की खुशियाँ
देने में हैं
लेने में नहीं

निवेदन - इस पत्रिका को विद्यालय, मंदिर, अस्पताल आदि सार्वजनिक स्थल पर लगवायें, जहाँ अधिक से अधिक लोग इसे पढ़ सकें। अभियान का हिस्सा बनने हेतु सम्पर्क करें। 9785 959102

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ

11

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

चौथा छन्द

(गतांक से आगे...)

जीवत्व भव्यत्व, अभव्यत्व - इन तीन पारिणामिकभावों में शुद्धजीवत्वशक्तिलक्षणवाला (परम) पारिणामिकभाव शुद्ध (परमभावग्राही) द्रव्यार्थिकनय के आश्रित होने से **निरावरण है तथा शुद्ध (परम) पारिणामिकभाव के नाम से जाना जाता है। वह बन्धमोक्षरूप पर्याय से रहित है।**[1]''

परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय के विषयभूत इस द्रव्यस्वभाव अर्थात् परमस्वभाव की महिमा गाते हुए नयचक्रकार लिखते हैं-

''एवं पिय परमपदं सारपदं सासणे पठिदं।
एदं पिय थिररूवं लाहो अस्सेव णिव्वाणं।।[2]

जिनशासन में इस परमपारिणामिक भाव को ही परमपद और सारभूत कहा गया है। यही अविनाशी तत्त्व है। इसके लाभ को ही निर्वाण कहते हैं।

सद्धाणणाणचरणं जाव ण जीवस्स परम सब्भावे।
ता अण्णाणी मूढ़ो संसारमहोदहि भमइ।।[3]

जबतक जीव का अपने इस परमस्वभाव में श्रद्धान, ज्ञान और आचरण नहीं है, तबतक वह मूढ़ अज्ञानी संसार-समुद्र में भटकता है।''

निश्चय-व्यवहार के प्रकरण में जिसे परमशुद्ध निश्चयनय का विषय कहा गया है, वही यहाँ परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय की विषयवस्तु है।

जिसप्रकार निश्चय-व्यवहार के प्रकरण में परमशुद्ध निश्चयनय नयाधिराज है; उसीप्रकार द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिकनय के प्रकरण में परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय नयाधिराज है।

इस गीत में समागत **शुद्ध** पद का यही स्वरूप है।

अशुद्धि तीन प्रकार की होती है।

१. कर्मोपाधि सापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय संबंधी।
२. उत्पाद-व्यय सापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय संबंधी।
३. भेदकल्पना सापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकनय संबंधी।

इसीप्रकार शुद्धि भी तीन प्रकार की होती है -

१. कर्मोपाधिनिरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय संबंधी।
२. उत्पाद-व्यय निरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय संबंधी।
३. भेदकल्पना निरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय संबंधी।

ध्यान रहे इस प्रकरण में कर्मोपाधि, भेदकल्पना और उत्पाद-व्यय से निरपेक्षता ही शुद्धता है और इनसे सापेक्षता ही अशुद्धता है।

शुद्ध, अशुद्ध और उपचार से रहित परमभाव ही मैं हूँ - यही मेरी शुद्धता है।

मैं तो उक्त तीनों प्रकार की अशुद्धियों और इनके अभावरूप शुद्धियों से भी पार **परमभावरूप शुद्ध हूँ।**

जब मैं कहता हूँ कि मैं शुद्ध हूँ तो उसका अर्थ उक्त परमभावरूप शुद्धता होती है। मेरी यह शुद्धता परमभावरूप है, परमपारणामिक भाव रूप है, परम शुद्धनिश्चयनय के विषयरूप हैं, परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय के विषयरूप हैं।

इस छन्द में अपने आत्मा को शुद्ध कहा जा रहा है, वह उक्त शुद्धनयों की विषयवस्तु नहीं है। **यहाँ तो परम पारिणामिकभावग्राही द्रव्यार्थिकनय की विषयभूत शुद्धता है।**

परमपारिणामिकभावग्राही द्रव्यार्थिकनय की विषयभूत शुद्धता मुझमें है; इसलिये मैं शुद्ध हूँ।

मुझमें कर्मोपाधि निरपेक्षता वाली शुद्धता नहीं, उत्पाद-व्यय निरपेक्षता वाली शुद्धता भी नहीं तथा भेदकल्पना निरपेक्षता वाली शुद्धता भी नहीं है।

मैं तो इन तीनों द्रव्यार्थिकनयों से निरपेक्ष परमभाव रूप हूँ। 'मैं शुद्ध हूँ' का यही अर्थ यहाँ अपेक्षित है।

हमारी आत्मवस्तु का जो अंश (द्रव्यांश) अपरिवर्तनशील है; वह शुद्ध-बुद्ध है, अजर, अमर है, परिपूर्ण है तथा पर्यायांश वर्तमान में अशुद्ध है, विकृत है, अपूर्ण है।

आत्मा को शुद्ध होना नहीं है; वह तो शुद्ध है, त्रिकाल शुद्ध है, सदा शुद्ध है।

यहाँ 'मैं शुद्ध हूँ' का अर्थ यह है कि मैं परमभावग्राही द्रव्यार्थिकनय का विषयभूत परमपदार्थ हूँ, परमशुद्ध-निश्चयनय का विषयभूत परम पदार्थ हूँ।

जिसप्रकार यह शुद्ध स्वभाव द्रव्यरूप है; उसीप्रकार बुद्धस्वभाव भी द्रव्यरूप है। बुद्धस्वभाव एक प्रकार से ज्ञानस्वभाव ही है; परन्तु पर्यायरूप ज्ञान नहीं लेना द्रव्यस्वभाव रूप ज्ञान लेना। (शेष पृष्ठ 8 पर...)

१. समयसार गाथा ३२० की तात्पर्यवृत्ति टीका
२. द्रव्यस्वभाव प्रकाशक नयचक्र, गाथा ४१३ ३. वही, गाथा ३७४

पटाखों पर पाबंदी : राजस्थान पत्रिका की खबर पर राज्य मानवाधिकार आयोग ने लिया प्रसंज्ञान

अब आयोग ने कहा, सीएस-कलक्टर रोकें पटाखों का प्रदूषण

पहले चिकित्सकों ने किया था आगाह

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर . चिकित्सकों के बाद अब राज्य मानवाधिकार आयोग ने कोरोना को देखते हुए जनहित में दीपावली पर पटाखों का प्रदूषण रोकने को कहा है। आयोग ने मुख्य सचिव, गृह सचिव और स्वास्थ्य सचिव, सभी जिला कलक्टर और पलिस अधीक्षकों को इस बारे में निर्देश जारी कर 12 अक्टूबर तक रिपोर्ट भी मांगी है।

आयोग ने रविवार को राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित खबर के आधार पर जनहित से जुड़े इस मामले में प्रसंज्ञान लिया। खबर में बताया था कि कोरोना महामारी के चलते पटाखों का प्रदूषण रोकने की आवश्यकता है। इसे लेकर सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन रोग विभागाध्यक्ष सहित अन्य वरिष्ठ चिकित्सकों ने प्राचार्य को पत्र लिखा है।

डॉक्टरों ने कहा-पटाखे रहित हो दिवाली, नहीं तो होगी बड़ी मुसीबत

डॉक्टरों का कहना था कि पटाखों से प्रदूषण होगा और उससे कोरोना रोगियों के समक्ष सांस लेने में दिक्कत बढ़ सकती है।

इलाज से बेहतर सावधानी

मानवाधिकार आयोग के कार्यवाहक अध्यक्ष न्यायाधीश महेशचंद्र शर्मा ने आदेश में चिकित्सकों की ओर से जताई गई चिंता का हवाला दिया है। आयोग अध्यक्ष ने कहा कि इस समय पूरा संसार कोरोना महामारी से पीड़ित है। दीपावली पर पटाखे चले तो कोरोना रोगियों की संख्या काफी बढ़ सकती है। कोरोना रोग का प्रभाव श्वसन तंत्र पर होता है। प्रदूषण फैलने से कोरोना रोगियों को परेशानी होगी। आयोग अध्यक्ष ने कहा कि इस सम्बन्ध में वरिष्ठ चिकित्सकों की ओर से चिंता जताई गई है। इलाज से बेहतर सावधानी है, ऐसे में प्रदूषण रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

आयोजक : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन
प्रायोजक : श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
पोस्टर मँगायें एवं अभिवाव के फोटो/समाचार भेजें
संयोजक : संजय शास्त्री, जयपुर 97859-99100

पत्रिका सिटीजन
राजस्थान पत्रिका 02
जयपुर, रविवार, 04 अक्टूबर, 2020
सूर्यास्त
सूर्योदय

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र स्वस्तु

निवेदक श्री प्रेमचन्द बजाज
संस्थापक–संचालक
मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा

कोरोना के चलते मेडिसिन रोग विभाग के डॉक्टरों ने दिया प्राचार्य को प्रस्ताव

डॉक्टरों ने कहा-पटाखे रहित हो दिवाली, नहीं तो होगी बड़ी मुसीबत

धुएं से अस्थमा, सीओपीडी और कोरोना मरीजों के लिए खतरा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. कोविड-19 महामारी के चलते प्रदेश के सीनियर डॉक्टरों ने इस बार दिवाली पर पटाखों पर पूरी तरह रोक लगाने की मांग की है। इस

हर घर पर लगेंगे जागरुकता के स्टिकर

शहरवासियों का जागरूक करने के उद्देश्य से हैरिटेज निगम और ग्रेटर निगम की ओर से हर घर पर स्टिकर लगाए जाएंगे। शनिवार को

जयपुर जिले में मिले 424 संक्रमित, दो की मौत

जयपुर. जिले में शनिवार को कोविड-19 के 424 नए मामले सामने आए हैं वहीं दो की मौत दर्ज की गई है। कुल संक्रमितों की संख्या अब 33,758 और

(पृष्ठ 6 का शेष...)

ध्यान रहे बुद्ध का अर्थ सम्यक्ज्ञानी नहीं है, केवलज्ञानी भी नहीं है; अपितु इन सबसे भिन्न ज्ञानस्वभावी तत्त्व है। ज्ञान मेरा स्वभाव है। मैं प्रगट होनेवाला ज्ञान नहीं हूँ, मैं तो सदा प्रगट भावरूप ज्ञान हूँ। 'मैं बुद्ध हूँ' का आशय यही है।

मैं सहज ज्ञाता-दृष्टा आतमराम हूँ। ज्ञान मेरा स्वभाव है, त्रिकाल स्वभाव है। मैं जानने रूप नहीं, जानने के स्वभावरूप हूँ।

यह भगवान आत्मा किसी के भी विरुद्ध नहीं है। यह अविरुद्ध स्वभाव वाला आत्मा एक अर्थात् अखण्ड है, अनन्त गुणों का, असंख्य प्रदेशों का अनादि अनन्त अखण्ड पिण्ड है।

इसप्रकार मैं शुद्ध-बुद्ध हूँ और अविरुद्ध स्वभावी एक अखण्ड तत्त्व हूँ। मैं किसी के भी विरुद्ध नहीं हूँ। विरोध मेरे स्वभाव में ही नहीं है। मैं एक हूँ, अद्वितीय हूँ।

मैं तो बस मैं हूँ, मैं ही हूँ, मेरे अलावा मेरे में कुछ है ही नहीं।

मैं किसी पररूप तो हूँ ही नहीं, पर से प्रभावित होने वाला भी नहीं हूँ; मैं तो एकदम अप्रभावी तत्त्व हूँ। मैं न तो पर से प्रभावित हूँ, न परपरणति से प्रभावित हूँ।

मैं किसी के विरुद्ध भी नहीं हूँ और किसी से प्रभावित भी नहीं हूँ। इसप्रकार मुझसे पर का और पर से मेरा कोई संबंध है ही नहीं। मैं पूर्णतः स्वतंत्र तत्त्व हूँ, स्वाधीन तत्त्व हूँ।

अब प्रश्न यह है कि ऐसा यह आत्मा प्राप्त कैसे होता है?

इसके उत्तर में कहते हैं कि यह आत्मा आत्मानुभूति से प्राप्त होता है, आत्मानुभूति में प्राप्त होता है।

प्राप्त होने का मतलब यहाँ प्राप्त होने वाला नहीं है; क्योंकि मैं तो स्वयं आत्मा हूँ। जब मैं स्वयं आत्मा हूँ तो फिर उसमें प्राप्त होने का क्या सवाल है?

मैं तो एक प्रकार से प्राप्त ही हूँ। प्राप्त होने का तात्पर्य ज्ञान का ज्ञेय बनना है, श्रद्धान का श्रद्धेय बनना है, ध्यान का ध्येय बनना है, अनुभूति में आना है - इससे अधिक और कुछ नहीं।

उक्त सम्पूर्ण कथन का निष्कर्ष यह है कि - यह 'मैं' अर्थात् दृष्टि का विषयभूत भगवान आत्मा ज्ञान, श्रद्धान, ध्यान रूप अनन्त गुणात्मक अनुभूति का विषय बनता है तो सर्वगुणांश में आह्लाद रूप होता है, सर्व गुणांशों में सम्यक्त्व स्फुरायमान होता है। सम्यग्दर्शन ज्ञान और चारित्र की एकतारूप मोक्षमार्ग प्रगट होता है - **इसे ही आत्मा का प्राप्त होना कहते हैं।**

इसप्रकार की आत्मानुभूति में प्राप्त होने वाला मैं ज्ञानस्वभावी हूँ, आनन्दस्वभावी हूँ, ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ।

हमारे अन्तर में इसप्रकार का अजपाजाप निरन्तर चलना चाहिये; अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग निरन्तर रहना चाहिये।

ज्ञानानन्दस्वभावी आत्मतत्त्व की ऐसी अनुभूति सभी आत्मार्थिजनों को शीघ्र प्राप्त हो - इसी मंगल भावना के साथ विराम लेता हूँ। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur67@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 अक्टूबर 2020

प्रति,